E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 5 | May 2025

वैदान्तिक के रूप में दारा शिकोह : एक अध्ययन

आबु नुराइन
संस्कृत विभाग, सिदो कान्हु मुर्मू विश्वविद्यालय, दुमका

सारांश :

युवराज दारा शिकोह भारतीय मुगल सम्राट शाहजहाँ के ज्येष्ठ पुत्र थे। मोहम्मद दारा शिकोह का जन्म 20 मार्च 1615 ई. को राजस्थान के अजमेर शहर में हुआ था। ऐसी प्रसिद्धि है कि बादशाह शाहजहाँ ने पुत्र प्राप्ति के लिए अजमेर में ख्वाजा मइनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि की दरगाह में जाकर मन्नत माँगी थी। दारा शिकोह की जीवन-यापन, रहन-सहन में ख्वाजा तथा सूफी धारा का स्पष्ट प्रभाव सतही दिखाई देता है। जिन्होंने महज 40 वर्ष की उम्र में 'मज्मा-उल-बहरैन' नामक एक पुस्तक लिखी जो फारसी भाषा में है, जिसका अंग्रेजी नाम 'मिंगलिंग ऑफ टू ओशन्स' अर्थात 'दो महासागरों का मिलन', संस्कृत में जो 'समुद्रसंगम' के नाम से विख्यात है। इस ग्रंथ में वेदान्त दर्शन के प्रकरण ग्रन्थ 'वेदान्त सार' से मिलते जुलते वेदान्त दर्शन का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है। दारा शिकोह ने जिसमें पंचमहाभूत, ईश्वर, ईश्वर के गुणों, ईश्वर के दूत, पृथ्वी, जीवन एवं विदेह मुक्ति जैसे विषयों का वर्णन एक वैदन्तिक के रूप में सूफी शैली में किया हैं। यह शोध आलेख सामान्य रूप से दारा शिकोह के साहित्यिक योगदान और विशेष रूप से 'मज्मा'उल-बहरैन' के परिप्रेक्ष में अध्ययन है।

कूटशब्द: दारा शिकोह, शहजहाँ, समुद्रसंगम, वेदान्त दर्शन, वैदान्तिक, बहुभाषावाद।

भूमिका :

जब अखिल विश्व राजनीतिक एवं सामाजिक प्रभुत्व स्थापित करने के लिए आक्रामक नीति और उपनिवेशवाद अपना रहा था, उस समय भारत के अल्पज्ञात नायक मुगल युवराज दारा शिकोह जैसे गौरवशाली व्यक्तित्व को स्मरण करना अत्यंत प्रासंगिक है। दारा शिकोह शांति, बहुलतावाद, बहुभाषावाद और बहुसंस्कृतिवाद के मूर्तिमान प्रतीक थे।

दारा शिकोह (जिन्हें कभी-कभी दारा शुकोह भी लिखा जाता है) सम्राट शाहजहाँ के ज्येष्ठ पुत्र थे और मुगल साम्राज्य के उत्तराधिकारी होने के बावजूद, वे एक राजा से अधिक सूफी साधक, कवि, कलाविद, वास्तुकार, दार्शनिक, रहस्यवादी और सांप्रदायिक सद्भाव के प्रतीक थे। उनकी यह विलक्षणता वर्तमान समाज के लिए अनुकरणीय है। दारा शिकोह ने अपनी प्राथमिक शिक्षा मुगल दरबार के शिक्षकों अब्दुल लतीफ सहारनपुरी और हज़रत आख़ुंद मीरक से प्राप्त की, जिन्होंने उन्हें अरबी-फारसी साहित्य, तफ़्सीर (कुरआनी व्याख्या), फ़िक़्ह (इस्लामी न्यायशास्त्र), और तैमूर के इतिहास से परिचित कराया। बाद में, पिता के आदेश पर उन्होंने ग्रीक और रोमन दर्शन का भी अध्ययन किया।

मुगल परिवार में दारा शिकोह का व्यक्तित्व अद्वितीय था; वे अन्य राजकुमारों से सभी मामलों में भिन्न थे। उनमें हुमायूँ की ज्ञान-पिपासा और अकबर की धार्मिक सहिष्णुता का समन्वय था। हुमायूँ की तरह, दारा ने भी ज्ञानार्जन को जीवन का उद्देश्य बनाया, जबकि अकबर की तरह वे सांप्रदायिक सद्भाव और तुलनात्मक धर्मों के अध्ययन में रुचि रखते थे। उनका आध्यात्मिक ज्ञान हिंदू-मुस्लिम संतों, विशेषकर हज़रत मियाँ मीर और बाबा लाल दास बैरागी, के सान्निध्य का परिणाम था। दारा के संरक्षण में अनेक कवियों, लेखकों और विद्वानों ने कार्य किया। उन्होंने हिंदू पंडितों की सहायता से उपनिषद्, भगवद्गीता और योगवाशिष्ठ जैसे ग्रंथों का फारसी में अनुवाद करवाया। दारा शिकोह की प्रमुख रचनाओं में 'सफीनात-उल-औलिया', 'सकीनात-उल-औलिया', 'रिसाला-ए-हकनुमा', 'मज्मा-उल-बहरैन' और 'सिर्र-ए-

अकबर' शामिल हैं। जब अखिल विश्व राजनैतिक तथा सामाजिक प्रभुत्व स्थापित करने के लिये आक्रामक नीति तथा उपनिवेशवाद को अपना रहा था। वहाँ इस स्थिति में हमें भारत का अज्ञात नायक मुगल युवराज दारा शिकोह के जैसा गौरवमय नायक को स्मरण करना तथा अनुशीलन करना अत्यंत प्रासंगिक हो उठता है। दारा शिकोह शांति, बहुत्ववाद, बहुभाषावाद, बहुसंस्कृतिवाद का अमूर्त प्रतीक थे।

समीक्षा :

गार्गी भट्टाचार्य (२०१९) ने अपने लेख में वर्णन करती है - एक अलग दार्शनिक/आध्यात्मिक दृष्टिकोण है जिसका उद्देश्य एकेश्वरवादी विचारों को स्थापित करना है। "सत्य के सत्य" की खोज में, दारा वेदान्त और सूफीवाद के अवलोकनों से अत्यधिक प्रेरित थे, जिसे अंततः मजमा-उल-बहरैन की पहचान मिली। वर्तमान चर्चा इस ग्रंथ को पराः सांस्कृतिक साहित्य के ढांचे में स्थानांतरित करेगी, यह विश्लेषण करते हुए कि यह विभिन्न सीमाओं को कैसे पार करता है।

समीन तबस्सुम (२०२३) दारा शिकोह अपने ग्रंथ समुद्रसंगम में दो महासागर का उल्लेख करते है वे महासागर द्वय हिन्दू धर्म और इस्लाम धर्म ही हैं। इस ग्रंथ में दो महासागर यानि धर्मों के विलय बिन्दु खोजने की प्रयास किया गया है। यह दो धार्मिक दर्शनों, इस्लाम और हिंदू धर्म के बीच समानताओं का पता लगाने का एक गंभीर प्रयास है। यह एक आध्यात्मिक ग्रंथ है जो न केवल दो धर्मों के बीच समानताओं पर प्रकाश डालता है बल्कि सांप्रदायिक सद्भाव के लिए उनके आध्यात्मिक तालमेल का भी आह्वान करता है।

सेनगुप्ता (२०१५) कहते हैं इस विषय का विश्लेषणात्मक गहन अध्ययन के पश्चात निष्कर्ष तक पहुंचे की आध्यात्मिक राजा दारा शिकोह अपने पुस्तक में दो संप्रदायों में जो समानता हैं उसे हिन्दू मुस्लिम दो धार्मिक संश्लेषण से प्रतिपादित किय।

Dr. I.Sandhya Jyosthna (2024) जी अपने इस शोध कार्य में दारा शिकोह के बहुसंस्कृतिकवाद का चर्चा किए हैं। दारा शिकोह हिंदू धर्मग्रंथों का फारसी में अनुवाद और उनका मौलिक कार्य, "मजमा-उल-बहरीन" (दो महासागरों का मिलन), परंपराओं में आध्यात्मिक सत्य की एकता में उनके विश्वास को रेखांकित करता है। विरोध का सामना करने के बावजूद, धार्मिक बहुलतावाद और आपसी सम्मान के लिए दारा शिकोह की वकालत भारत में धार्मिक सद्भाव और सांस्कृतिक विविधता पर समकालीन चर्चाओं में गूंजती रहती है।

उद्येश्य :

इस लेख का निम्नलिखित उद्येश्य है :

- दारा शिकोह के द्वारा वेदान्त शास्त्र का अध्ययन की ऊपर प्रकाश डालना।
- दारा शिकोह के द्वारा वैदन्तिक एवं सूफी सिद्धांतों पर आलोचना करना।

विधि :

प्रस्तुत शोध कार्य में विषय वस्तु **विश्लेषण विधि** का प्रयाग किया गया है। इस विधि में मुख्य एवं गौण तथ्यों या दस्तावेजों को विश्लेषण करके निष्कर्ष तक पहुंचने की कोशिश करता है।

परिणाम :

'सफीनात उल औलिया' दारा शिकोह का प्रथम रचना है जो २५ वर्ष की उम्र में दारा के द्वारा लिखा गया था। इस रचना में दारा ने सूफि, संत और धार्मिक गुरुओं के जीवन को बारीकी से अध्ययन किया। अध्ययन के उपरान्त उनको निराशा हाथ लगी क्योंकि उसमें कई सूफी संतों का जन्म-मृत्यु का विवरण पांडुलिपि में लिपिबद्ध नहीं थे। दारा शिकोह ने उसी काम को पुर्ण रूप देने के लिए सफीनात उल औलिया का रचना किया जिसके दस अध्याय में हजरत मोहम्मद(सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम), चार खलीफा ए राशिदीन , अमिर उल मोमिनीन के बारे में तथा पांच सूफी संतों - कादरी, नक्शबंदी, चिश्ती, कुबरवि, और सुहरावर्दी - के बारे में तथा नबी/पैगंबर की बीबी और महिला रहस्यवादी के बारे में चर्चा किया गया है।

दारा शिकोह का 28वें वर्ष में दूसरा रचना है- 'सकीनात उल औलिया'। इस पुस्तक में दारा ने मियान मीर, मियान जीव एवं उनके आध्यात्मिक गुरु मुल्ला शाह की जीवनी के बारे में विस्तृत विवेचन किया है। उनके अध्यात्मिक गुरु मुल्ला शाह से 'सकीनात उल औलिया' में दारा ने सूफीवाद के विभिन्न आयामों पर प्रश्नों का वाद-संवाद किया है, जिसमे समी अर्थात गान, ईश्वर के दर्शन या रूयत आदि शामिल हैं। 'रिसाला ई हकनुमा' या 'सत्य का दिशा निर्देशक' दारा शिकोह का तृतीय रचना जो महज 30 पन्नों का है। यह पुस्तक आध्यात्मिक मार्ग के विभिन्न स्तरों एवं आध्यात्मिक साधनों की पराकष्ठा है। हकनुमा में ईश्वरीय सत्य पथ छः भागों में विभक्त हैं जो चार विश्व से संयुक्त हैं - नसुत या मानव जगत, मालाकुत या अदृश्य जगत, जवारत या सर्वोच्च स्वर्ग और लहूत व ईश्वरीय जगत, पांचवां, हवयत या दिव्य सर से संबंधित है एवं छठा, उसी मार्ग का विस्तार है।

मज्मा-उल-बाहरैन दारा शिकोह की अंतिम रचना है, जो उन्होंने 42वें वर्ष के उम्र में लिखी थी। 'मज्मा'उल बाहरैन' मूलत फारसी भाषा में विरचित है जिसको संस्कृत भाषा में 'समुद्रसंगम' नाम दिए गया। 'ततश्च सत्यवाप्तधिकारिमिरवशयं ज्ञातव्यानां सफलनां कतिपयवाक्यानां सारस्य संग्रहमकरवम। ज्ञानिनो द्वयोरपि मतसमुद्रयोरिह संगम इति सुमद्रसंगम इति नाम चस्थापयम्' ।[1] अर्थात् मैंने कुछ सफल कथनों का सार भी एकत्र किया है जिन्हें उन लोगों को अवश्य जानना चाहिए जो सत्यता के हकदार हैं। ज्ञानियों के दो मत सागरों के संगम को मैंने दो सागरों का संगम नाम दिया है। 'मज्मा-उल-बाहरैन' को अंगल भाषा में अनुवादक डॉ.महफूज उल हक ने 'दा मिंगलिंग ऑफ टू ओशन्स' नाम दिया। दारा शिकोह के द्वारा 'मज्मा-उल-बाहरैन' में वेदान्त दर्शन का एक इस्लामिक दृष्टिकोण से विवेचन किया गया है जिसमें उनके आंतःधर्मिकता, बहुधार्मिकतावाद, वैदांतिकता के बारे में परिचय मिलते हैं। समुद्रसंगम में इस्लामिक सूफीवाद और हिन्दू धर्म के वेदान्त दर्शन को एक दूसरे का पूरक माना है। दारा ने जो दो महासागर के बारे में सभी का ध्यान आकर्षण करना चाहा वो दो महासागर इस्लामिक सूफीवाद और हिन्दू वेदान्त दर्शन ही हैं।

मज्मा के 22 भागों में दारा शिकोह वेदान्त तथा सूफीवाद के विविध तत्वों का इस्लामिक दृष्टि से व्याख्या प्रस्तुत करते हैं जो निम्नावत हैं -

1. अथ तत्वों निरूपणम् (उन्सूर)।
2. अथ इंद्रिय निरूपणम् (हवास)।
3. अथ ध्यान निरूपणम् (आशघल)।
4. अथ परमेश्वरगुणव्याख्यानम् (सिफत इ अल्लाह ताल)।
5. अथ रूहापरपर्यायस्य आत्मनोनिरूपणम् (रूह)।

[1] सुमद्रसंगम ग्रंथ, डॉ वी. राघवन, पृ:६८

6. अथ प्राणादी निरूपणम् (बाद्)।
7. अथ जगच्चतुष्टस्य निरूपणम् (आवालीं इ अरबा)।
8. अथ शब्दानादयोर्व्याख्या (आवाज)।
9. अथ नूर पर्याय ज्योतिर्व्याख्या।
10. अथ परमात्मा आत्मनामावरणे (रूयत)।
11. अथ नामानि निरूपयन्ते (अस्माई अल्लाह ताला)।
12. अथ सिद्धत्व ऋषीश्वरत्व निरूपणम् (नाबुवत व वलीयत)।
13. अथ ब्रह्माण्ड निरूपणम्।
14. अथ दिग निरूपणम्।
15. अथास्माना परपर्याय गगन निरूपणम।
16. अथ पृथिवी निरूपणम (जमीन)।
17. अथ पृथिव्य विभागनिरूपणम् (किस्मत इ जमीन)।
18. अथ आलम वर्जख पर्याय प्रेतलोक निरूपणम।
19. अथ पुनरूत्थान निरूपणम (कयामत)।
20. अथ मुक्ति निरूपणम।
21. अथ दिवारत्रिश्च निरूपणम।
22. अथ ब्रह्माण्डप्रवाहानन्त्या निरूपणम।

दारा शिकोह अपनी ग्रंथों की शुरुआत में परम करुणाशील अल्लाह का नाम लेते हुए वर्णन करते हैं की उनके कोई नाम नहीं है, सब नाम ही उनके है, ऐसे परमेश्वर को नमन है -

प्रारम्भः किल तन्नाम्ना यस्य नाम न विद्यते।

सर्वाण्यपि च नामानि यस्य नामानि वस्तुन।।

नमस्कारस्य बाहुल्यमद्वितीयाय वस्तुने।

तस्मै।[2]

अपि च

प्रतिवेशी सवासी च सहगः सर्वमेव सः।

[2]सुमद्रसंगम श्लोक सांख्य -१

पटच्चरे दरिद्रस्य क्षौमे राज्ञः स सर्वतः।।

भाति संसद भेदोऽयमभेदो रहसि स्फुटः।

ईशस्य शयनं भूयस्तच्छ्यः सर्वमेव सः।।[3]

अर्थात् 'वह पड़ोसी, साथी और सहयात्री है, वह भिखारियों के फटे-पुराने वस्त्रों और राजाओं के वस्त्रों में है, वह ऊपर की सभा में और नीचे के गुप्त कक्ष में है, ईश्वर की शपथ, वह सब कुछ है और वास्तव में, ईश्वर की शपथ, वह सब कुछ है।'

दारा शिकोह ने एक एवं अद्वितीय अल्लाह / ईश्वर के तौहिद के वर्णन के द्वारा वेदान्त का मूल सार अपने ग्रंथों में लिपिबद्ध किया। दारा शिकोह के 22 तत्वों को 3 उपविभाग में विभाजित किए जा सकते हैं - तत्वों से सम्बंधित, आत्मा से सम्बंधित तथा ईश्वर से सम्बंधित।

- तत्वों से सम्बंधित – पंच इन्द्रियाँ, प्राणवायु, प्राकृतिक तत्वों, ब्रह्माण्ड, जगच्चतुष्टय, पृथिवी, पृथिवी का विभाग, दिशा, आकाशादि।
- आत्मा से सम्बंधित - आत्मा, सिद्धत्व एवं ऋषित्व, मृत्युलोक, वर्जख, मुक्ति।
- ईश्वर से सम्बंधित - ईश्वरीय गुणावली, ईश्वर के नाम, दिन-रात, शब्द, प्रकाश अथवा नूर, ध्यान, ईश्वर की दृष्टि।

दारा शिकोह अपने समुद्रसंगम में उपोरोक्त 22 तत्वों की वैदांतिक व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। सांख्य तत्व की दृष्टि से समुद्रसंगम सांख्य एवं योग दर्शन के समान ही प्रतीत होता है। सांख्य योग दर्शन में क्रमशः 25 तथा 26 तत्व हैं जो निम्न रूप में है -

प्रकृति -------पुरुष ⟹ ईश्वर (योग दर्शन)

महत् तत्व या बुद्धि

अहंकार

तन्मात्राएं	पञ्च महाभूत	ज्ञानेन्द्रियां	कर्मेन्द्रियां	मन
शब्द से	आकाश	श्रोत्र	वाक	
स्पर्श से	वायु	त्वक	पाणि	
रूप से	तेज	चक्षु	पाद	
रस से	जल	जिह्वा	पायु	
गंध से	पृथ्वी	नासिका	उपस्थ	

[3] सुमद्रसंगम श्लोक सांख्य -२ यह जमी की चैपाइयों में से एक है। दारा ने भी इसे अपनी 'हसनात उल आरिफिन' में उद्धृत किया है।

दारा शिकोह ने समुद्रसंगम में पाँच तत्वों का विवेचन किया है, जो वेदांतसार के पाँच महाभूतों से संबंधित हैं । इन्हें उन्होंने "अनासिर" कहा है। ये तत्व हैं—उन्सुर-ए-आज़म (आकाश), वायु, जल, तेज (अग्नि) और पृथ्वी।

इनमें से "उन्सुर-ए-आज़म" अर्थात आकाश को तीन भागों में विभाजित किया गया है—भूताकाश, चित्ताकाश, और चिदाकाश।

- भूताकाश वह है जो समस्त प्राणियों में व्यापक है—"तत्र सर्वभूतव्यापको भूताकाश"।
- चित्ताकाश वह है जो ब्रह्मांड तक विस्तृत है, इसे "मन आकाश" भी कहा जाता है।
- चिदाकाश सर्वव्यापक है, जो हर स्थान में स्थित है।

दारा शिकोह के अनुसार, आकाश से ही माया की उत्पत्ति होती है, जो समस्त सृष्टि का कारण मानी जाती है। इसी माया से जीवात्मा की उत्पत्ति होती है। तत्पश्चात, आकाश से हिरण्यगर्भ अथवा आत्मा की आत्मा—परमात्मा या नबी मुहम्मद (स.अ.व.) की रूह उत्पन्न होती है।

उसके बाद वायु की उत्पत्ति होती है, जिसे परमात्मा की निःश्वास (श्वास) कहा गया है और यह शुद्ध चैतन्य स्वरूप है। तीसरा तत्व है तेज (अग्नि), जो वायु से उत्पन्न होता है। परमात्मा की निःश्वास से जो उष्ण वायु निकलती है, उससे अग्नि की उत्पत्ति मानी जाती है। जब यह निःश्वास वायु शीतल होती है, तो उससे जल की उत्पत्ति होती है।

पंच महाभूतों के बाद दारा शिकोह पंच इन्द्रियों का वर्णन करते हैं, जिन्हें फारसी में हवस कहा गया है। वे इन्द्रियाँ हैं:

- शम्मा (घ्राण)।
- जायका (रसना या जिह्वा)।
- बसिर (चक्षु)।
- समीया (कर्ण)।
- लमिसा (त्वचा)।

ये पंच ज्ञानेन्द्रियाँ पंच तन्मात्राओं से क्रमशः उत्पन्न हुई हैं:

- गंध से घ्राणेन्द्रिय।
- रस से रसना।
- रूप से चक्षु।
- शब्द से कर्ण।
- स्पर्श से त्वचा।

ये इन्द्रियाँ पंचमहाभूतों से संबंधित हैं:

- पृथ्वी से नासिका।
- जल से जिह्वा।

- तेज से चक्षु।
- आकाश से कर्ण।
- वायु से त्वचा।

इसके पश्चात दारा शिकोह अंतः इन्द्रियों (आंतरिक ज्ञानेन्द्रियाँ) का वर्णन करते हैं:

- मुश्तरक (संयुक्त अनुभव)।
- मुताखय्यिला (कल्पना)।
- मुतफक्किरा (विचार)।
- हाफिज़ा (स्मृति)।
- और वहिमा (अनुमान)।

ये सभी भारतीय वेदांत शास्त्रों में बुद्धि, मन, अहंकार, चित्त, और इनका सम्मिलन – पंचम अंतःकरण – से मिलते-जुलते हैं। यद्यपि भारतीय अद्वैत वेदांत में ध्यान के कई प्रकार माने गए हैं, तथापि उनमें सर्वोत्तम ध्यान है अजपा। यह अजपा ध्यान जाग्रत अवस्था और स्वप्न अवस्था दोनों में स्वतः उत्पन्न होता है और सभी प्राणियों में सर्वदा विद्यमान रहता है। वेद और कुरआन दोनों इस रहस्य को प्रकट करते हैं।

'तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम्' ।[4]

अर्थात जिस स्थान में धारणा की हुई है उसी स्थान में ज्ञेय-विषयक ज्ञान का एक समान बना रहना अर्थात ज्ञेय विषयक ज्ञान से भिन्न ज्ञान को उपस्थित ना करना 'ध्यान' है।

'व इम्मिन् शैइन् इल्ला युसब्बिहु बिहम्दिही व लाकिल्ला तफ्कहू-ना तस्बीहहुम्' ।[5]

अर्थात, और कोई चीज नहीं, जो उसकी प्रशंसा के साथ तस्बीह न करती हो, परंतु तुम अपनी तस्बीह को समझते नहीं हो।

दारा शिकोह अपने समुद्रसंगम ग्रंथ में एक-एक करके विभिन्न विषयवस्तुओं को प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने परमात्मा के गुणों के व्याख्यान में वैदांतिक मतों के तीन गुण—सत्त्व, रज, और तम—को सूफ़ीवाद में प्रचलित ईश्वरीय गुणों—जलाल और जमाल—में समाहित किया है। दारा शिकोह ने सत्त्व और रज गुणों को जमाल (कोमलता, सौंदर्य) में, और तम गुण को जलाल (गंभीरता, शक्ति) में अंतर्भावित किया है। ये गुण अलग-अलग कार्य नहीं करते, बल्कि समेकित रूप से एक साथ कार्य करते हैं।

दारा शिकोह ने इन तीन गुणों की तुलना ब्रह्मा, विष्णु और महेश के साथ की है, जिन्हें उन्होंने इस्लाम के तीन ईश्वरीय दूतों—जिब्राईल, मिकाईल, और इस्राफ़ील—के समकक्ष माना है।

[4] आचार्य पतंजलि प्रणीत योग दर्शन ३/२

[5] कुरआन १७/४४

इसके पश्चात, दारा शिकोह ने रूह अर्थात आत्मतत्त्व का निरूपण किया है। उन्होंने आत्मा के द्विविध रूपों का उल्लेख किया है—एक सामान्य रूह और दूसरा अबुल-अरवाह। ये दो रूप भारतीय वेदांत के जीवात्मा और परमात्मा के तुल्य हैं। दारा शिकोह आत्मा के निरूपण में अपने ग्रंथ समुद्रसंगम में कहते हैं-

"शुद्धं चैतन्यं स्थूलोपाधिना सूक्ष्मोपाधिना च परिछिन्नं सत् रूहं आत्मेत्युच्यते।"

(अर्थात: शुद्ध चैतन्य जो स्थूल और सूक्ष्म उपाधियों से सीमित हो, वही रूह या आत्मा कहलाती है)।

सभी जीवात्माएँ जहाँ अंतर्लीन होती हैं, वही परमात्मा या अबुल-अरवाह है। रूह और अबुल-अरवाह वस्तुतः एक ही हैं, परंतु अज्ञान के कारण भिन्न प्रतीत होते हैं—जैसे जल और तरंग, या वृक्ष और वन में भेद प्रतीत होता है। यह भिन्नता माया और अज्ञान के कारण व्यष्टि और समष्टि में भेद की प्रतीति मात्र है।

दारा शिकोह अपने दूसरे ग्रंथ रिसाला-ए-हकनुमा में भी आत्मा की चार अवस्थाओं का वर्णन करते हैं, जिनका समर्थन भारतीय वैदांतिक परंपरा के अनुयायी भी करते हैं। ये अवस्थाएँ हैं:

1. आलम-ए-नासूत (भौतिक जगत)।

2. आलम-ए-मलकूत (अदृश्य जगत)।

3. आलम-ए-जबरूत (शक्ति का जगत)।

4. आलम-ए-लाहूत (ईश्वरीय जगत)।

दारा शिकोह, एक उदार वैदांतिक होने के नाते, इन सूफ़ी अवस्थाओं की तुलना वेदांत की चार अवस्थाओं—जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, और तुरीय—से करते हैं और दोनों को एक ही सत्य की अभिव्यक्ति मानते हैं। अंत में, दारा शिकोह मुक्ति की संज्ञा का निरूपण करते हुए कहते हैं:

"मुक्तिर्नाम शुद्धचैतन्ये परिच्छिन्नानां विलयः विगलनमिति यावत्।"

(अर्थात: शुद्ध चैतन्य में परिच्छिन्न जीवों का विलय या पूर्ण लय ही मुक्ति है।)

दारा शिकोह ने मुक्ति के तीन प्रकार बताए हैं:

1. जीवनमुक्ति 2. विदेहमुक्ति 3. सर्वमुक्ति

उपसंहार :

दारा शिकोह ने अपने 'सुमद्रसंगम' ग्रंथ में वैदन्तिक सभी उपदानों का अति सूक्ष्मातिसूक्ष्म रूप से चर्चा प्रस्तुत किया है। दारा शिकोह एक वैदन्तिक एवं सूफीवादी चिन्ताधारा के व्यक्ति थे जो उनकी सुमद्रसंगम अध्ययन करने से ही प्रमाणित होता है। वे इस ग्रंथ में ब्रह्म एवं अल्लाह के साजुज्य प्रतिपन्न करने की प्रयत्न उनकी उदार चिन्ताधारा को दर्शाती है। दारा शिकोह विभिन्न धर्मों कों अध्ययन करने के उपरांत पाया कि सभी धर्म एक ईश्वर की ओर ले जाति है, जो सर्वशक्तिमान और अखिल ब्रह्मांड का निर्माता है। यह दारा का एक मौलिक राहस्यवादी अवधारणा है जो उन्हे दूसरों से अलग पहचान दिलाती है और आकुंठित हो कर हम बोल सकते हैं कि दारा शिकोह एक इंडो-इस्लामिक रहस्यवाद का राजदूत थे। दारा शिकोह इस्लाम के एक नया धारा का प्रचालन करने का कोशिश किया था परंतु वे असमर्थ हुए और मुग़ल दरवार की षडयंत्र का शिकार होते हूए अपने प्राण त्याग करना पड़ा। दारा शिकोह एक धार्मिक संप्रीति का प्रतीक हैं और उनके तरह मनोभावापन्न व्यक्ति जो अधुना हमारे समाज में परिलक्षित नहीं होता है। दारा

शिकोह जैसा सदभाव रखने वाला, समाज हितैषी, समाज सुधारक का आभी के समय में अत्यंत प्रयोजन है। जिनके कृति में सदा सर्वधर्म सदभाव, सांप्रदायिक संप्रीति एवं बहुत्ववाद प्रस्फुटित हो उठाता है।

सन्दर्भ सूची :

1) डॉ पाठक जगन्नाथ । २००५ । मज्मा'उल् बहरैन (सुमद्र-सङ्गम) । शिमला एवं इलाहाबाद, भारत । भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान एवं राका प्रकाशन ।

2) Haq, M. Mahfuz-Ul. 1929. 'Majma'-Ul-Bahrain' Or 'The Mingling Of The Two Oceans'. Calcutta, India. The Asiatic Society.
3) Dr Raghavan, V. 2018. Dara Shikoh's Sumudra Sangama Grantha. Chennai, India. Dr. V. Raghavan Center For Performing Arts.
4) Dr. Chaudhuri, Rama. 1954. A Critical Study Of Dara Shikuh's Sumudra-Sangama.Vol-1. Part-1&2. Calcutta, India. Pracyavani-Mandira.
5) Dr. Chaudhuri, Jatindra Bimal. 1954. Sumudra-Sangama. Vol-2. Calcutta, India. Pracyavani-Mandira.
6) Hasrat, Bikrama Jit.1935. Dara Shikoh: Life And Work, Visvabharati Publishing Department, Calcutta
7) Dr. Chand, Tara. 1943. Dara Shikoh And Upanishads. The Authority Of H.E.H The Nizam's Government, Hyderabad-Deccan. Vol-17. Page No:397-413.
8) Tabassum Sameena. 2023. A Call for Eclectic Mysticism In Dara Shikoh's Majma'Ul-Bahrain. International Journal Of Research In Academic world. Vol-02, Issue-01, January 2023. Page. No:29-30. Url: https://academicjournal.ijraw.com/media/post/IJRAW-2-1-19.1.pdf
9) Dr. Haidar Fayyaz. 2023. Dara Shikoh And Islamic Pluralism. Aligarh Journal Of Interfaith Studies. Vol-04, Issue-01,Feb 2023. Page. No:26-36. Url: https://aiccenter.com/upload/issue/03_dr-faiyaz-haider_dara-shikoh-the-harbinger-of-interfaith-understanding-1676739236.pdf
10) Dr. Jyosthna I.Sandhya. 2024. Dara Shikoh And His Multiculturalism. International Journal Of Creative Research Thoughts. Vol-12, Issue-6, June 2024. Page. No:g650-g653. Url:http://www.ijcrt.org/papers/IJCRT2406751.pdf
11) Shiekh Bilal Ahmad. 2020. Dara Shikoh; An Ambassador Of Indo-Islamic Mysticism. International Education & Research Journal. Vol-06, Issue- 11, Nov 2020. Page No:17-19. Url : https://ierj.in/journal/index.php/ierj/article/view/2178
12) Sengupta, chandni. 2015. Syncretic Philosophy And Eclecticism In The Religious Views Of Dara Shikoh. International Journal Of Management And Social Science. Vol-03,issue-02, Feb 2015. Page No:570-580. Url: https://ijmr.net.in/current/CJnkQKwzvJm1Ilx.pdf
13) Shiekh, Bilal Ahmad. 2020. Dara Shikoh; A Disseminator Of Qadarism In India. International Journal Of Creative Research Thoughts. Vol-08, Issue-12. Page No-583-588. , Dec 2020, Url : http://www.ijcrt.org/IJCRT2012055
14) Where the two oceans meet: an attempt at Hindu-Muslim rapprochement in the thought of Dara Shikuh.. (n.d.) >*The Free Library.* (2014). Retrieved Apr 30 2025 from https://www.thefreelibrary.com/Where+the+two+oceans+meet%3a+an+attempt+at+Hindu-Muslim+rapprochement...-a0205746294